बाइबल टीचर

वर्ष 16 नवम्बर 2019 अंक 12

सम्पादकीय

कलीसिया का पैसा

बाइबल में हम पढ़ते है कि सप्ताह के पहिले दिन जब अराधना के लिये मसीही एकत्रित होते हैं तो उन्हें अपने चंदे को अपनी आमदनी अनुसार देना चाहिए। (1 कुरि. 16:1-2)। अपना चंदा हमें रविवार को अराधना के समय देना चाहिए। यह चंदा लोग अपनी आमदनी तथा इच्छा अनुसार देते हैं। किसी पर कोई दबाव नहीं डाला जाता कि आपको इतना या कितना देना है। 2 कुरि. 8:3 में हम पढ़ते है कि गरीबी में भी उन लोगों ने अपनी सामर्थ से बाहर मन से दिया था। चंदे के लिये रविवार का दिन इसलिये चुना गया था। क्योंकि इस दिन मसीही लोग अराधना के लिये इकट्ठे होते थे। परन्तु आजकल कई स्थानों पर यह देखा जाता है कि कभी भी चंदा लेने के लिये पासबन घरों में पहुंच जाते है और कई बार एक रजिस्टर बना लेते हैं जिसमें हर महीने आपको चर्च फीस देनी पड़ती है। बाइबल में हमें कहीं भी ऐसी बात पढ़ने को नहीं मिलती। मसीह की कलीसिया में ऐसा नहीं है।

कलीसिया के कार्य चंदे से चलते हैं इसलिये जो लोग कमा रहे हैं उन्हें अपना चंदा देना चाहिए। परन्तु चंदे के लिये कभी भी किसी पर दबाव नहीं डालना चाहिए। जब आप अपने चंदे को देते है तब आप प्रभु के कार्यों में सहयोग करते है। यदि आपकी आमदनी है तो आपको रविवार को अराधना में चंदा देना चाहिए। कई बार कलीसिया के पास पैसा नहीं होता कि वह अपने कार्यों को भली-भांति कर सके। इसका कारण यह है कि सब लोग जैसे देना चाहिए वैसे नहीं देते। यहूदी लोग पुराने नियम में कमाई का दसवां अंश देते थे परन्तु हम लोग आज नये नियम में रहते हैं और हमें दसवें हिस्से भी अधिक देना चाहिए लेकिन किसी के दबाव में आकर न दे। प्रभु हर्ष से देने वाले को स्वीकार करता है। आज लोग महंगे मोबाइल तथा महंगी घड़िया रखते हैं परन्तु प्रभु के कार्य के लिये नहीं देते। प्रभु ने अपने वचन में कहा है, ''परन्तु बात तो यह है कि जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा का भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा का भी और हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करें; न कुढ़-कुढ़ के, और न दबाव से क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है।'' (2 कुरि. 9:6-7)। यदि कोई

प्रचारक आपसे पैसे मांगता है तो वह आप पर दबाव डाल रहा है जो कि गलत है। आज बहुत से प्रचारक ऐसा सोचते हैं कि देने से लेना धन्य है'' क्योंकि बहुत से लोग लालची और स्वार्थी होते है। बाइबल सिखाती है, ''लेने से देना धन्य है।'' (प्रेरितों 20:35), इसलिये हमारे अन्दर देने की नियत होनी चाहिए।

परमेश्वर चाहता है कि लोग उसके कार्य के लिये चंदा दे इस बात में हमारी नियत साफ़ होनी चाहिए। चंदा देने के लिये सदस्यों को सिखाना चाहिए। कभी भी किसी प्रचारक को यह कहना नहीं चाहिए कि आपको कितने पैसे देने हैं। जिसने भी अपने मन में जो ठाना है, उसे वैसे ही देना चाहिए। सण्डे का दिन आने से पहिले सोच लें कि मैं इतना चंदा दूंगा। जल्दबाजी में चंदा न दें, बल्कि पहिले से मन में ठान लें। (2 कुरि. 9:7)। मकिदुनिया में जो कलीसिया थी उनके विषय में पौलुस कहता है कि उन्होंने कलेश से और कंगालपन में भी बड़े आनन्द और उदारता से चंदे को दिया। (2 कुरि. 8:2)।

अब बात यह है कि कलीसिया में चंदे को किस प्रकार से रखा जाये? क्या देखभाल करने के लिये खंजाची की आवश्यकता होती है? प्रत्येक कलीसिया को कुछ ऐसे लोगों को चुनना चाहिए जो चंदे की या पैसों की सही तरीके से देखभाल कर सकें। जो पैसा आता है और जो जाता है उसका हिसाब किताब ईमानदारी से रखना बहुत ज़रूरी है। एक बात का बहुत ध्यान रखा जाना चाहिए कि इसकी देखभाल के लिये दो तीन व्यक्ति होने चाहिए। यह एक बड़ी जिम्मेवारी है क्योंकि आपस में एक दूसरे को यह पता रहेगा कि हिसाब किताब कैसे चल रहा है। यदि एक व्यक्ति संभालेगा तो वह अपनी मनमर्ज़ी चला सकता है। इसलिये दो तीन लोग इस जिम्मेवारी को निभाये तो बहुत अच्छा है। यह काम मनुष्यों की तथा प्रभु की दृष्टि में बड़ी ही ईमानदारी से होना चाहिए। (2 कुरि. 8:21)। पौलुस जब प्रभु के पैसे का लेन देन करता था तो वह दो या तीन को अपने साथ लेकर चलता था। (2 कुरि. 8:19, 20)।

बाइबल में हम यीशु के एक चेले के विषय में पढ़ते है। उसका नाम था यहूदा इस्करियोती और उसके पास बाइबल में लिखा है, चंदे का हिसाब रहता था। बल्कि बाइबल में तो यह तक लिखा है कि उसके पास थैली रहती थी और वह चोर था। वह चंदे में से पैसे निकाल लेता था। (यूहन्ना 12:4-6)। यानी वह पैसे का बहुत लालची था। उसने यीशु को तीस चांदी के सिक्कों के लालच में पकड़वा दिया था। (मती 26:14-15) पैसे का लोभ बड़ा ही खतरनाक है। आज बड़े-बड़े घोटाले क्यों होते हैं? यह सब पैसों के लोभ के कारण होते हैं। कई लोगों ने पैसे के लोभ में अपने विश्वास को छलनी बना लिया है। (1 तीमु. 6:9-10)। हन्नयाह और सफीरा ने पैसे के लालच में घोटाला कर दिया। (प्रेरितों 5:1-11)। शमौन परमेश्वर के यानि पवित्र आत्मा के दान को पैसे से खरीदना चाहता था। (प्रेरितों 8:18-23)। उससे कहा गया, ''तेरे पैसे तेरे साथ नाश हो।''

पैसे को लेकर कई कलीसियाओं में समस्याएं खड़ी हो जाती है, इसलिये पैसे को बुद्धिमानी से खर्च किया जाना चाहिए। यह चंदा प्रभु का है और प्रभु के लोगों ने दिया है इसलिये यह सबका अधिकार है जानने का, कि आप पैसा किस प्रकार से खर्च करते हैं। चर्च का पैसा बुद्धिमानी के साथ इस्तेमाल किया जाना चाहिए। प्रत्येक कलीसिया आत्मनिर्भर है तथा प्रत्येक को अपने फैसले स्वयं लेने चाहिए। कभी भी मसीह की कलीसिया को साम्प्रदायिक कलीसिया की तरह न चलायें। मसीह की शिक्षा में बने रहें। (2 यूहन्ना 9)। वचन में न तो जोड़े और न इसमें से घटायें। (प्रकाशित 22:18-19)।

अपनी चौकसी रखिये। शैतान किसी के मन में भी घुस सकता है। यहूदा के मन में शैतान घुस गया। लिखा है, ''शैतान यहूदा में समाया।''। देखें यीशु ने बारह को चुना था, परन्तु उसने कहा तुममें से एक शैतान है। उसे चंदा रखने की जिम्मेवारी तो दी गई थी परन्तु वह ईमानदारी से अपने कार्य को निभा नहीं सका।

यहूदा शैतान तो नहीं था परन्तु शैतान बन गया था। आज मसीहीयों को भी चौकस रहना चाहिए, कई ऐसा न हो कि हम भी शैतान के चंगुल में फंस जाएं। (1 कुरि. 10:12, मत्ती 13:41-42; यूहन्ना 15:6)। यहूदा दूसरे चेलों के साथ अच्छी तरह रहता था, परन्तु शैतान के फंदे में वो ही फंसा। इसलिये अपनी चौकसी करें, यदि आपके पास कलीसिया का पैसा रखने की जिम्मेवारी है तो ध्यान रखें कि आप एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी को निभा रहें हैं। पौलुस अपना बड़ा ध्यान रखता था और वह कहता है ''परन्तु मैं अपनी देह को मारता कुटता और वश में लाता हूं; ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं। बात तो बिल्कुल सही कही है। (1 कुरि. 9:27)। कलीसिया का पैसा प्रभु का है, किसी प्रचारक का नहीं और न ही कलीसिया के खजांची का है इसलिये कलीसिया के पैसे को बड़ी सावधानी से रखिये।

एकता की प्रार्थना

सनी डेविड

प्रभु यीशु के जीवन में एक बड़ी ही विशेष बात यह हम देखते हैं कि उसका जीवन एक प्रार्थनापूर्ण जीवन था। एक स्थान पर हम देखते है, कि वह स्वयं अपने लिये प्रार्थना करता है। एक अन्य स्थान पर हम देखते हैं, कि वह अपने शत्रुओं और बैरियों के लिये प्रार्थना करता है। फिर एक और जगह, हम देखते हैं कि वह अपने सब विश्वासियों के लिए प्रार्थना करता हैं और यह वह समय था जबकि

उसकी दर्दनाक मृत्यु उस से कुछ ही घंटे पर थी। सो वह प्रार्थना के द्वारा अपने पिता के निकट आया, और बड़ी ही नम्रता के साथ उसने पिता से निवेदन करके कहा, कि हे पिता, जो लोग अभी मेरे पीछे हो लिये हैं, ''मैं केवल इन्हीं के लिये बिनती नहीं करता, परन्तु उन सब के लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हो। जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हो, इसलिये कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा। और वह महिमा जो तूने मुझे दी, मैंने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं।'' (यूहन्ना 17:20-22)।

यहां हम देखते हैं, कि प्रभु की एक बड़ी ही इच्छा है, और उसने इस बात के लिये प्रार्थना भी की, कि वे सब लोग जो उसमें विश्वास करते हैं, उसमें एक हो। परन्तु जिस प्रकार की एकता की इच्छा प्रभु अपने लोगों से करता है, और जिस एकता के लिये उस ने मौत के साए में बैठ कर प्रार्थना की, वह एकता केवल तभी आ सकती है जब कि उसके सारे विश्वासी केवल एक ही नाम से कहलाएं, और एक ही सुसमाचार पर विश्वास करें, मानें और सिखाएं और सबके सब केवल एक ही कलीसिया में हों। यदि इन बातों को नहीं अपनाया जाता, तो जिस एकता के लिये प्रभु यीशु ने प्रार्थना की वह वास्तव में कभी भी विद्यमान नहीं हो सकती। सो हमारे लिये आज एक बड़ी ही महत्वपूर्ण और गंभीर बात यह है कि हम वे आवश्यक कदम उठाएं जिनके फलस्वरूप उसी प्रकार की एकता आज प्रभु के विश्वासियों में आ जाए जिसकी इच्छा प्रभु रखता है। क्या हम उस प्रभु की प्रार्थना को पूरा करने में कुछ भी कसर उठा रखेंगे जिसने अपने खून की एक एक बूंद हमारे छुटकारे के लिये बहा दी ताकि हम उसमें एक हो? यह प्रश्न न केवल इसी दृष्टिकोण से आवश्यक है, कि वे सब लोग जो पहिले ही से प्रभु के विश्वासी हैं, उसमें एक हों, परन्तु इसलिये भी कि भविष्य में वे सब जो मसीह के विश्वासी बनें वे भी एक देह के अंग बनें जिसका सिर स्वयं मसीह है। प्रभु की इच्छानुसार, एकता लाने की ओर सबसे पहिला कदम जो उठाया जा सकता है, वह यह है, कि उसके सब विश्वासी लोग आरंभ के विश्वासियों की तरह केवल एक ही नाम से कहलाएं। अर्थात, जैसे कि हम पढ़ते हैं कि ''चेले सबसे पहिले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।'' (प्रेरितों 11:26)। आरंभ में प्रभु के सारे विश्वासी केवल इसी नाम से अर्थात ''मसीही'' कहलाते थे। सो हम देखते हैं, कि जब प्रेरित पौलुस ने राजा अग्रिप्पा को यीशु का सुसमाचार सुनाया, तो उसने सुनकर पौलुस से कहा, ''तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है।'' (प्रेरितों 26:28)। यानी उस समय सभी लोग यह जानते थे कि मसीह के विश्वासी लोग ''मसीही'' कहलाते हैं, और यदि वे भी उसके विश्वासी बन जाएंगे तो वे स्वयं भी मसीही बन जाएंगे। फिर प्रेरित पतरस एक जगह कहता है, ''और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई

दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।'' (प्रेरितों 4:12)। उद्धार केवल मसीह के नाम में हैं। यह वह नाम है जो सब नामों में श्रेष्ठ है। (फिलिप्पियों 2:9-11; 1 पतरस 4:16)। और जब हम अपने आप को ''मसीही'' कहते हैं तो हम इस नाम के द्वारा मसीह की महिमा करते हैं और मसीह के नाम को ऊंचा उठाते हैं। परन्तु आज प्रभु, के विश्वासियों में सैकड़ों प्रकार के नाम प्रचलित है। क्या वे प्रेरित पतरस के साथ मिलकर यह कह सकते हैं कि ''स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया''? सो यदि हम प्रभु यीशु की प्रार्थना के उत्तर में एक होना चाहते हैं, तो आवश्यक है कि सबसे पहिले हम हर एक अन्य नाम को अपने ऊपर से हटाकर केवल मसीह के नाम को ही अपने ऊपर रखें।

फिर, मसीही एकता के बारे में दूसरा आवश्यक कदम यह है, कि वे सब जो अपने आपको मसीही समझते हैं, अपने आपको इस प्रश्न के दृष्टिकोण से जांचे, कि मैं किस प्रकार से एक मसीही बना? ऐसा मैं इसलिये कहता हूं कि क्योंकि इस बात पर अनेकों लोगों के अपने-अपने विचार है। जैसे कि, उदाहरण के रूप से, कुछ लोग अपने आपको केवल इसलिये मसीही समझते हैं, क्योंकि उनका जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ था, जिस में परिवार के सभी सदस्य प्रभु यीशु में विश्वास रखते थे, लोग अपने आपको मसीही इसलिये कहते हैं, क्योंकि एक दिन उन्होंने प्रभु का संदेश सुना और वे विश्वास ले आए, सो वे फलस्वरूप अपने आपको मसीही कहने लगे। इसी प्रकार के अनेकों अन्य उदाहरण भी दिये जा सकते हैं। परन्तु उन पर विचार न करके, मैं आपको यह बताना चाहता हूं, कि बाइबल के अनुसार मसीही बनने का केवल एक ही मार्ग है। हम देखते हैं, कि मुर्दों में से जी उठने के बाद प्रभु यीशु ने अपने चेलों से मिलकर उनसे कहा, ''यों लिखा है, कि मसीह दुख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा। और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा।'' (लूका 24:46, 47)। फिर, स्वर्ग में वापस जाते हुए, उसने उनसे कहा, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।'' (मरकुस 16:15, 16)।

सो, यहां हम क्या देखते हैं? अर्थात यह, कि यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार किया जाएगा, और जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसीका उद्धार होगा। अब इस बात को ध्यान में रखकर, जब हम आगे देखते हैं, तो हमें मिलता है, कि जिस दिन सब से पहिली बार यीशु के सुसमाचार का प्रचार लोगों में किया गया, उस दिन यरूशलेम में सुननेवालों की एक बहुत बड़ी भीड़-इक्टठा थी। और जब वे सुनकर विश्वास ले आए तो उन्होंने यीशु के चेलों से पूछा, ''कि हे भाइयों हम क्या करें?'' और

हम देखते हैं, कि जवाब में वे उनसे यूं कहते हैं, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले।'' (प्रेरितों 2:37, 38)। और लिखा है, ''सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए.... और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।'' (प्रेरितों 2:41, 47)। सो इस प्रकार से, हम देखते हैं, कि बाइबल के अनुसार मनुष्य एक मसीही केवल तभी बनता है, जब वह यीशु में विश्वास करता है और पापों से अपना मन फिराता है, और अपने पापों की क्षमा के लिये प्रभु के नाम से बपतिस्मा लेता है। इसके अतिरिक्त, एक मसीही बनने का और कोई मार्ग नहीं है।

फिर, हम यह भी देखते हैं, कि वे जो इस प्रकार से उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था। अर्थात, सभी लोग एक ही तरह से उद्धार पाते थे, और एक ही मंडली में मिला दिये जाते थे। इसीलिये, उन लोगों की मंडलियां ''मसीह की कलीसियाएं'' कहलाती थी। (रोमियों 16:16)। उन लोगों की कलीसियाएं, आज की तरह, भिन्न-भिन्न नामों से नहीं कहलाती थी। वे लोग न तो कैथलिक थे और न प्रोटेस्टैन्ट थे, परन्तु वे केवल मसीही और मसीह की कलीसिया के सदस्य थे। (मत्ती 16:18)। उस समय, एक बार, जब कुछ लोगों ने मसीह के नाम की जगह कुछ अन्य नामों को लाने का प्रयत्न भी किया, तो प्रेरित पौलुस ने उनकी कड़ी निंदा की और उन्हें डांटा। उसने कहा, कि मुझे तुम्हारे बारे में बताया गया है, ''कि तुम में झगड़े हो रहे हैं मेरा कहना यह है, कि तुम में से कोई तो अपने आपको पौलुस का, कोई अपुल्लोस का, कोई कैफा का, और कोई मसीह का कहता है। क्या मसीह बंट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला?'' (1 कुरिन्थियों 1:11-13)। और कुछ आगे चलकर, वह उन से फिर कहता है, ''क्योंकि हम सबने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया।'' (1 कुरिन्थियों 12:13)। और वह देह मसीह की कलीसिया है जिसमें सारे सदस्य देह के अंग है और मसीह देह का सिर है। (इफिसियों 1:22,23; कुलुस्सियों 1:18)।

आज जबकि मसीह के विश्वासियों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है, यह कितना आवश्यक है कि उसके सभी विश्वासी उसकी प्रार्थना के प्रत्युत्तर में उसमें एक हो। एक ही नाम से कहलाएं, एक ही सुसमाचार को मानें, और एक ही कलीसिया के अंग हो। तब, सचमुच में सारा जगत प्रतीति करेगा कि मसीह ही प्रभु है। क्योंकि एक ही साथ मिलकर जलने वाले दियों का प्रकाश बहुत अधिक होता है। एकता में बल है, ताकत है, और कशिश है। इसीलिये प्रभु ने प्रार्थना करके कहा, ''कि वे सब एक हो.... इसलिये कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही न मुझे भेजा।'' मेरी आशा है, कि आप प्रभु के एक विश्वासी हैं, तो आप

उसके वचन के केवल एक सुनने वाले ही नहीं परन्तु उस पर चलने वाले बनेंगे। (याकूब 1:22)।

यीशु को याद करना

जे.सी. चोट

हम इस पृथ्वी पर रहकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं, परन्तु यहां से चले जाने के पश्चात हम चाहते हैं कि लोग हमें याद करें। हमें भूल न जायें। मकबरे बनाये जाते है, कब्रों पर नाम लिखे जाते हैं फोटो में माला चढ़ाई जाती है तथा लोगों को याद करने के लिये बहुत से तरीके इस्तेमाल किये जाते है।

कुछ देशों में तो स्मारक बनाये जाते हैं, कुछ अपनी सेना के लोगों को याद करने के लिये स्मारक बनाते है। गणतंत्र दिवस तथा स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है। इन सबके लिये बड़े बड़े प्रोग्राम आयोजित किये जाते हैं।

इसी तरह से परमेश्वर का पुत्र यीशु भी चाहता है कि उसे उसके लोग याद करे। परमेश्वर ने अपने लोगों के लिये बड़े-बड़े कार्य किये। नूह और उसके परिवार को परमेश्वर ने बहुत बड़े जल प्रलय से बचाया। फिर हम देखते हैं कि परमेश्वर ने आकाश में धनुष दिखाया और वाचा बांधी कि ऐसा जल प्रलय फिर कभी न होगा। (उत्पत्ति 9:8-17) यह धनुष परमेश्वर की ओर से एक चिन्ह था और आज तक भी, परमेश्वर ने अपना वादा पूरा करके रखा है।

फिर हम देखते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों को गुलामी से निकालकर लाया था। किस प्रकार से इस्त्राएली लोगों ने लाल समुन्द्र को पार किया था। इसी बीच परमेश्वर ने उनके बीच कई आश्चर्यक्रम भी किये थे। पुराने तथा नये नियम में कई आश्चर्यक्रम किये गये और यह सब इसलिये हुआ क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि उसके द्वारा उसके लोग उसे याद रखें। वह चाहता है कि उसके लोग याद रखें कि उसने उनके लिये क्या-क्या किया? परमेश्वर नहीं चाहता कि उसके लोग उसे भूलकर वापस संसार की बुराई में चले जायें।

जब हम प्रभु यीशु के विषय में देखते हैं तो हमें पता चलता है कि उसने अपने प्राणों को क्रूस पर बलिदान कर दिया। वह लोगों के लिये मारा गया, गाड़ा गया तथा तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा। प्रभु यीशु ने इस पृथ्वी पर एक निष्पाप जीवन बिताया। यीशु के अपने चेले ने उसे पैसे के लोभ में शत्रु के हाथों पकड़वा दिया था। उसके पश्चात हम देखते हैं कि किस प्रकार से क्रूस पर उसने एक भयानक मृत्यु देखी। क्रूस की मृत्यु के पश्चात उसे कब्र में रखा गया और तीसरे

दिन वह कब्र से बाहर आ गया यानि संसार में यह एक बहुत बड़ा अद्भभुत कार्य हुआ था। जी उठने के बाद अपने चेलों को तथा कई लोगों को वह दिखाया दिया। और उसके बाद वह स्वर्ग में अपने पिता के पास चला गया। आज वह जगत का उद्धारकर्ता है। मनुष्य के पास मृत्यु के बाद जीने की आशा है।

अब जो लोग बपतिस्मा लेकर उसकी आज्ञा को मानकर उसकी कलीसिया के सदस्य बन जाते हैं, वह चाहता है कि उसके लोग उसे याद करें। उसकी देह को तथा उसके लोहू को उसके लोग हमेशा याद करें। अपनी मृत्यु से पहिले एक भोज का आयोजन किया। वह चाहता था कि अपने प्रेरितों के साथ इस भोजन को खाये और इसको हम प्रभु भोज कहते हैं। इस भोज को एक यादकारी के रूप में लिया जाता है। मसीही लोग प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन यानि सण्डे को इस यादकार को मनाते हैं। इस भोज में अखमीरी रोटी तथा अंगूर का रस होता है। रोटी उसकी देह को याद करने के लिये खाई जाती है तथा शीरा उसके लोहू को याद करने के लिये लिया जाता है। यीशु ने मत्ती 26:26-29 में इस प्रकार से कहा था, ''उसने उस से कहा तू कह चुका'' जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली और आशीष मांगकर तोड़ी और चेलों को देकर कहा, लो खाओ, यह मेरी देह है। फिर उसने कटोरा लेकर, धन्यवाद किया, उन्हें देकर कहा, तुम सब इसमें से पिओ। क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है। मैं तुम से कहता हूं, कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पिऊंगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पिऊं।

इस बात पर ध्यान दीजिये कि उसने कहा था कि ''दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पिऊंगा जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पिऊं। इस बात से उसका अर्थ यह था कि जब कलीसिया की स्थापना अर्थात उसके राज्य की स्थापना हो जायेगी और जब लोग इसमें भाग लेंगे मैं उनके बीच में उपस्थित हूंगा।'' (मत्ती 18:20)।

कलीसिया की स्थापना के पश्चात हम पढ़ते हैं कि मसीही लोग सप्ताह के पहिले दिन जब अराधना के लिये इक्ट्ठे होते हैं वे प्रभु भोज में भाग लेते हैं। (प्रेरितों 20:7)।

प्रेरित पौलुस ने कोरिन्थ में मसीहीयों को लिखा था कि प्रभु भोज में किस प्रकार से भाग लेना चाहिए? वह कहता है ''क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुंची और मैंने तुम्हें भी पहुंचा दी; कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया रोटी ली और धन्यवाद करके, उसे तोड़ी और कहा, कि यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये है, मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। इसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया और कहा, यह कटोरा मेरे लोहू में नई वाचा है, जब कभी पिओ तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो तो प्रभु की मृत्यु का प्रचार करते हो। इसलिये जो

कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए, या उसके कटोरे से पिए, तो वह प्रभु की देह और लोहू का अपराधी ठहरेगा। इसलिये मनुष्य अपने आपको जांच ले और इस रीति से उस रोटी में से खाए। क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहिचाने वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता हैं (1 कुरि. 11:23-29)।

यहां हम देखते हैं कि प्रभु भोज की स्थापना किस प्रकार से हुई थी। प्रभु ने इसकी स्थापना की थी। आज संसार में जहां कहीं भी मसीह की कलीसियाएं हैं वे सब प्रत्येक सप्ताह प्रभु भोज लेती हैं और जहां प्रत्येक रविवार को प्रभु भोज नहीं होता वो सच्ची मसीह की कलीसिया नहीं है।

लीडर लीडरों को तैयार करते हैं

रॉयस फ्रैड्रिक

मूसा ने यहोशु को तैयार किया था ताकि वह एक लीडर बन सकें। दाऊद ने सुलेमान को तैयार किया था। ऐलिय्याह भविष्यद्वक्ता ने एलिशा को तैयार किया तथा यीशु ने बारह चेलों को तैयार किया ताकि वे उसका कार्य संभाल सकें। पौलुस ने तीमुथियुस को तैयार किया था तथा तीमुथियुस ने तीतुस को तैयार किया और यह सब लोग अच्छे अगुवे बने।

एक दिन प्रचारकों की भी मृत्यु होगी तथा वे भी इस संसार से चले जाएंगे (इब्रानियों 9:27) इसलिये इस कार्य को संभालने के लिये क्या हम लीडरों को तैयार कर रहे हैं?

आप जब इस दुनिया से चले जाऐंगे तब कलीसिया के कार्य को कौन संभालेगा? क्या हम अपने युवाओं को इस कार्य के लिये तैयार कर रहे हैं। कलीसिया के पुरुषों को हमें शिक्षा देकर तैयार करना है ताकि वे ऐलडर तथा डीकन बन सकें। (1 तीमु. 3; तीतुस 1:5-9)।

पौलुस ने तीमुथियुस को लिखते हुए कहा था ''और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे, जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों'' (2 तीमुथियुस 2:2)।

यदि हम लीडरों को तैयार नहीं करते तब बहुत से लोग जिन्हें हमने बपतिस्मा दिया है अपने विश्वास से गिरकर वापस चले जाएंगे क्योंकि उनकी अगुवाई करने वाला कोई नहीं होगा। आपका परिश्रम व्यर्थ होगा तथा वे लोग अपनी आत्माओं को हमेशा के लिये खो देंगे।

कलीसिया में पुरुषों को ट्रेनिंग देने से कलीसिया के कार्य में उन्नति होगी। अपने अच्छे विश्वासयोग्य जीवन से दूसरों को सिखायें (फिलि. 4:9, 1 तीमु. 4:12-16)। उन्हें प्रभु भोज के लिये इस्तेमाल करें, प्रार्थना में अगुवाई करने के

लिये गीत गवाने के लिये तथा बाईबल अध्ययन कराने के लिये इस्तेमाल करें। उनकी सुनें, उनकी समस्याओं को जाने और उनका साहस बढ़ायें। ऐसा करने से आप अनेक आत्माओं को प्रभु के लिये जीत सकते हैं तथा आपके इस संसार से चले जाने के बाद भी प्रभु का कार्य चलता रहेगा। क्या प्रभु का कार्य आगे बढ़ाने के लिये हम अपने युवाओं का साहस बढ़ा रहे हैं? यदि आप एक चर्च लीडर है तो याद रखिये जब आप दुनिया से चले जायेंगे तब कलीसिया में अगुवाई कौन करेगा? क्या कभी आपने इसके विषय में सोचा है?

विशेष जानकारी के लिए जगह उचित देखें

चार्ल्स स्कॉट

यीशु मसीह ने संसार में लोगों को सबसे अधिक प्रभावित किया है। यहां तक कि नास्तिक लोग भी मानते हैं कि मसीह के जीवन और शिक्षा ने किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक लोगों को प्रभावित किया है। इसलिए उचित ज्ञान प्राप्त करने के लिये हर किसी को नये नियम की पहली चार पुस्तकें पढ़ना आवश्यक है। मसीह का जीवन और उसकी शिक्षा पर सब लोगों द्वारा विचार करना आवश्यक ही है। मसीह के बारे में सब बातों पर विचार करने के बाद प्रमाण यह साबित करता है कि यीशु मसीह ही सचमुच परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र है, जो हमारा उद्धार कराकर हमें स्वर्ग में अनादि घर दे सकता है, जहां वह हमारे लिए जगह तैयार करने गया है (यूहन्ना 14:1-3 व प्रेरितों 1:1-11)। यदि हम उसमें विश्वास करते हैं तो हमें वह सब पता होना चाहिए, जो उसकी इच्छा के अनुसार करने और जीवन बिताने के लिए आवश्यक है। आइए जानें।

स्वाभाविक है कि नैतिक और धार्मिक मामलों में सही और गलत के बारे में लोगों के मन में कई सवाल उत्पन होते हैं। नये नियम में इन सब सवालों के जवाब है।

कलीसिया का आरंभ कहां और कब हुआ? मसीह ने कहा था, ''मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न हो सकेंगे'' (मत्ती 16:16-18)। पुराने नियम में परमेश्वर के आत्मिक राज्य अर्थात कलीसिया की भविष्यवाणी की गई थी। मसीह ने स्पष्ट कहा था कि ''मेरा राज्य यहां का नहीं'' (यूहन्ना 18:36) यानी यह इस संसार का नहीं, बल्कि आत्मिक राज्य होना था। यह प्रेरितों के जीवन काल में यरूशलेम में होना था (यशायाह 2:2-3)। दानिय्येल ने परमेश्वर के राज्य की स्थापना उसके समय से चौथे सांसारिक राज्य (अर्थात रोमी राज्य के समय, दानिय्येल 2:44) के समय में होने की भविष्यवाणी की थी। प्रेरितों 2 अध्याय कलीसिया का आरंभ परमेश्वर द्वारा बताए समय, स्थान और ढंग के अनुसार वैसे ही हुआ बताता है (प्रेरितों 2:36-41)। लगभग 3000 लोगों ने विश्वास करके मन फिराया और बपतिस्मा लिया था।

क्या आप मरना जानते हैं?

जॉन स्टेसी

यीशु मसीह की मृत्यु अन्य सभी लोगों की मृत्यु से कई प्रकार से भिन्न थी। तौभी उसकी मृत्यु हमारी अपनी मृत्यु के लिये एक दृष्टांत बन सकती है।

1 पतरस 2:21 के अनुसार, मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। इसलिये जो बातें हमारे प्रभु की मृत्यु के साथ जुड़ी हुई हैं उनका हमें अवश्य ही अनुसरण करना चाहिए। सबसे पहली बात इस विषय में हम यह देखते हैं कि यीशु जानता था कि मृत्यु सभी मनुष्यों के लिये है और वह स्वयं भी एक दिन उसका सामना करेगा। यूहन्ना 10:11 से हम देखते हैं कि यीशु अपनी आने वाली मृत्यु से परिचित था, उसने कहा था, ''अच्छा चरवाहा मैं हूं अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है।'' यीशु ने अपनी मृत्यु के विचार को अपने से कभी अलग नहीं किया था। उसने अपनी मौत की तैयारी की थी। ऐसे ही हमें भी इस जीवन के रहते उस अनन्तकाल में प्रवेश करने के लिये अपने आप को तैयार करना चाहिए।

दूसरी बात हम यह देखते हैं कि यीशु ने अपने स्वर्गीय पिता की संगति में रहकर अपने आपको मृत्यु के लिये तैयार किया था। यीशु अकसर प्रार्थना करके अपने पिता के साथ समय व्यतीत किया करता था। लूका 6:12 में उसके बारे में हम यूं पढ़ते हैं और उन दिनों में वह पहाड़ पर प्रार्थना करने को निकला, और परमेश्वर से प्रार्थना करने में सारी रात बिताई। जब वह क्रूस के ऊपर था तो वह अपने पिता के पास वापस जाने की प्रतीक्षा में था। लूका 23:46 के अनुसार उसने कहा था, ''हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं।'' ऐसे ही हम भी आज प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर की संगति में रहकर अपने आप को मृत्यु के लिये तैयार कर सकते हैं।

तीसरे, परमेश्वर की इच्छा को सीखकर और उस पर चलकर यीशु ने अपने आप को मृत्यु के लिये तैयार किया था। यूहन्ना 4:34 के अनुसार यीशु ने कहा था, ''मेरा भोजन यह है कि अपने भेजने वाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसका काम पूरा करूं।'' यूहन्ना 6:38 में उसने कहा था, ''क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूं।'' आने वाले संसार में प्रवेश करने के लिये परमेश्वर की इच्छा पर चलकर अपने आप को तैयार करना बड़ा ही आवश्यक है। मत्ती 7:21 के अनुसार यीशु ने कहा था, जो मुझ से हे प्रभु हे प्रभु कहता है उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।''

क्या हम अपने, स्वर्गीय पिता की इच्छा को सीखकर और उस पर चलकर अपनी मृत्यु के दिन के लिये अपने आप को तैयार कर रहे हैं?

चौथे स्थान पर, यीशु ने परमेश्वर के वचन को इस्तेमाल में लाकर अपने आप को मरने के लिये तैयार किया था। यीशु पवित्रशास्त्र से परिचित था और उसे इस्तेमाल में लाता था। जब उसकी परीक्षा हुई थी तो शैतान के वारों को विफल करने के लिये उसने तीन बार परमेश्वर के वचन का इस्तेमाल किया था। जब शैतान ने यीशु से कहा था कि वह अपनी शक्ति से पत्थरों को रोटी में परिवर्तित कर सकता है, तो मत्ती 4:4 के अनुसार यीशु ने शैतान से कहा था कि लिखा है (व्यवस्था विवरण 8:3), कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।'' जब हमारा प्रभु क्रूस के ऊपर लटका हुआ था, तो यूहन्ना 16:28 में इस प्रकार लिखा हुआ है, ''इसके बाद यीशु ने यह जानकर कि अब सब कुछ हो चुका है, इसलिये कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो कहा, मैं पियासा हूं।'' पवित्रशास्त्र में लिखी बातें मरते समय भी मसीह के मन में थी। इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारे प्रभु ने अपने जीवन में और अपनी मृत्यु के समय भी पवित्रशास्त्र में लिखी बातों का इस्तेमाल किया था।

अब इब्रानियों 9:27 में लिखी इस बात से हम अपने इस पाठ को अंत करेंगे, ''...मनुष्यों के लिये एक बार मरना.... नियुक्त है।'' क्या आप उस नियुक्ति के लिये तैयार हैं? यदि आप यीशु के द्वारा मरना सीख लेंगे तो आप सचमुच में तैयार हो जाएंगे।

क्या स्त्री मण्डली में प्रचार कर सकती है?

बैटी बर्टन चोट

आज बहुत सारी डिनोमिनेशनों में, अराधना में स्त्रियां सरगरमी से भाग लेती हैं। इस सब के पीछे सोच यह है कि बाइबल हजारों साल पहले लिखी गई थी और उस समय के हिसाब से आज का समाज बहुत उन्नति कर चुका है। उस समय स्त्रियों को ''निचले दर्जे की'' और ''पुरुष के अधीन'' माना जाता था, परन्तु अब वे उन सारे कामों को, जिन्हें पुरुष कर सकता है, करने के लिए स्वतंत्र हैं। अधिकतर लोग वास्तव में इस नई सोच से बहुत खुश हैं, उनका मत है कि सदियों से स्त्रियों के साथ जो अन्याय हो रहा था, वह अब बंद हो गया है। इसलिए स्त्रियां प्रचार करती हैं, वे बिशप बनती है, वे पुरुषों वाले धार्मिक लिबास पहनती और पुरुषों वाले काम करती हैं।

विचार करने वाली बात

आत्मिक नेतृत्व की भूमिका में स्त्रियों का होना आपको कैसा लगता है?

क्या कालांतर में स्त्रियों को रोकने का कारण वास्तव में दबाव था या परमेश्वर के वचन के रूप में बाइबल को मानते हुए इसका सम्मान? क्या आधुनिक विचार (कि परमेश्वर ने नहीं बल्कि मनुष्यों ने अपने विचारों को लिखा, और उन्होंने अपने अनुभव लिखे हैं) पवित्र शास्त्र के अधिकार को घटा दिया है?

क्या परमेश्वर ने इस नई स्वतंत्रता की स्वीकृति दी थी? क्या बाइबल केवल उस समय के लोगों के लिए लिखी गई थी, यानी क्या इसके लेख पहली सदी या इसके पहले के लेखकों के अपने विचार थे? यदि सचमुच इसके वचन सर्वशक्तिमान परमेश्वर के मन से न होकर मनुष्य की सोच हैं तो अब तक यदि हम इसकी बातें मानते आ रहे हैं, तो हम अज्ञानता की बेड़ियों में जकड़े हुए हैं। परन्तु यदि इसके लेख परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे गए हैं, यानी परमेश्वर ने इसमें अपने श्वास के द्वारा अपने हृदय से मनुष्य के लिए संदेश दिया है, तो किसी मनुष्य को यह अधिकार नहीं है कि वह इसे ''पुराना'' कहे या इसे यह कहकर अनदेखा कर दे कि यह आज के समय में प्रासंगिक नहीं है।

प्रभु यीशु ने साफ-साफ कहा, ''जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहराने वाला तो एक है, अर्थात जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा'' (यूहन्ना 12:48)। उसने प्रेरितों को बताया, ''मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा, और जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा''। (मत्ती 16:19)।

पवित्र शास्त्र में बार-बार इसे परमेश्वर का वचन होने का दावा किया गया है, न कि मनुष्य का कहा गया है, ''सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है...'' (2 तीमुथियुस 3:16)। पवित्र शास्त्र के अंतिम संदेश में हमारे प्रभु ने चेतावनी दी, '' ...यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए, तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा। और यदि कोई इस भविष्यवाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से जिसकी चर्चा इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा'' (प्रकाशितवाक्य 22:18, 19)।

परमेश्वर के वचन के साथ खेलना आग से खेलना है। यह समझकर कि परमेश्वर से बढ़कर हमारे पास अधिकार है, उसके वचन को बदलना अपने ऊपर दण्ड लाना है।

गलातियों 1:6-9 में पौलुस ने चेतावनी दी कि चाहे स्वर्ग से कोई स्वर्गदूत भी आकर उस शिक्षा से, जो पहले ही परमेश्वर ने अपने आत्मा के द्वारा दे दी है, अलग शिक्षा दे, तो वह परमेश्वर की ओर से श्रापित होगा। पुरुष हो या स्त्री, वे सब लोग जिन्हें लगता है कि उन्हें परमेश्वर के वचन में बदलाव करने का

अधिकार है, न्याय के दिन दोषी ठहरेंगे।

बाइबल अध्ययन में ''अधिकार प्राप्त'' जीजस सेमिनार'' नामक एक समूह की सभा हुई, जो धार्मिक जगत में अगुवे होने का दावा करते थे। रस्सल शॉर्टो ने अपनी एक घटना का विवरण लिखा। उसने कहा, ''जीजस सेमिनार सुसमाचार की पुस्तकों की शब्द-दर-शब्द गहन समीक्षा करता है, जो अपने आप में एक सही प्रोजेक्ट है। इस समूह का दुस्साहस इस बात में मिलता है कि वे इस पर मत डालते हैं कि किन शब्दों और घटनाओं को ऐतिहासिक यीशु के साथ जोड़ा जाए। शेष वचनों को 'कहानीकारों' द्वारा जोड़ा गया माना जाता है। जैसा कि अनुमान लगाया जा सकता है, प्रामाणिकता के पक्ष में मत थोड़े हैं।''

विचार करने वाली बात

जब डिनोमिनेशनों के प्रचारक तथा अगुवे सरेआम यह सिखाते हैं कि बाइबल परमेश्वर का अविनाशी वचन नहीं बल्कि मनुष्य के मन की उपज है, तो एक साधारण ''विश्वासी'' का कहना ही क्या? कि यीशु कुंवारी से नहीं जन्मा था, उसने आश्चर्यकर्म नहीं किए, कि वह मुर्दों में से जी नहीं उठा था? क्या यह व्याख्या सही हो सकती है? हमारे लोग अविश्वासी क्यों बनते जा रहे हैं?

डिनोमिनेशनों के अगुओं तथा प्रचारकों में यही व्यवहार पाया जाता है, जिस कारण लोग बाइबल की उपेक्षा करके आत्मिक मामलों में अगुआई के लिए आधुनिक संस्कृति की ओर देखते हैं।

परन्तु परमेश्वर ने अपने लोगों की अगुआई का काम मनुष्य की सनक पर नहीं छोड़ा है। इसके बजाय उसने स्पष्ट नियम दे दिए हैं, उन्हें अपने वचन में साफ-साफ लिख दिया है और आज हमारे उपयोग के लिए उस वचन को संभाल दिया है। हर आत्मिक बात में हमारा अधिकार बाइबल ही होनी चाहिए।

पवित्र शास्त्र में ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता जहां किसी स्त्री ने खड़े होकर, परमेश्वर के अधिकार से प्रचार किया हो। प्रभु यीशु के साथ बहुत सी स्त्रियां होती थी और वे उसकी और प्रेरितों की सेवा किया करती थी, परन्तु उनमें से किसी को भी कभी प्रचार के लिए नियुक्त नहीं किया गया। सत्तर जनों को चुन कर भेजा जाने में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि उनमें कोई स्त्री भी हो। सभी प्रेरित पुरुष (नर) ही थे, और पिन्तेकुस्त वाले दिन पहली बार सुसमाचार सुनाने के लिए पतरस जब ग्यारह प्रेरितों के साथ खड़ा हुआ, तो वहां भी किसी स्त्री ने प्रचार नहीं किया था।

निश्चिय ही प्रभु यीशु की माता मरियम जबर्दस्त ''गवाही'' दे सकती थी। मरियम मगदलीनी को प्रभु द्वारा आश्चर्यकर्म से चंगाई की गई थी और मुर्दों में से जी उठने के बाद सबसे पहले उसने मरियम को ही दर्शन दिया था (शायद उसका विश्वास किसी भी प्रेरित से उस समय बढ़कर था जिन्हें मरकुस 14:16 में उसने

उनके अविश्वास के कारण डांट लगाई थी)। परन्तु इनमें से किसी भी स्त्री को प्रचार करने की अनुमति नहीं दी गई। मरियम और मारथा प्रभु यीशु की बहुत करीबी मित्र थी, उनके भाई लाजर को प्रभु यीशु ने मुर्दों में से जिलाया था। वे लोगों को प्रभु यीशु के बारे में बहुत अच्छी तरह गवाही देकर बता सकती थी। परन्तु न तो परमेश्वर ने और न ही प्रेरितों ने उन्हें गवाही देने को कहा।

क्यों? क्योंकि समाज में, घर में, और प्रभु की कलीसिया में स्त्री की भूमिका वही नहीं है जो पुरुश की है। पुरुषों को सुसमाचार की सार्वजनिक रूप में रक्षा करने, इसे निर्भय होकर सुनाने की जिम्मेदारी दी गई है ताकि जो लोग सुनें उनका मन परिवर्तन हो और वे दूसरों को भी सिखाने के योग्य हो।

दूसरी ओर, स्त्रियों को खामोशी से सीखने को कहा गया है। लिखा है, ''स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परन्तु अधीन रहने की आज्ञा है, जैसा व्यवस्था में लिखा भी है। और यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपने-अपने पति से पूछें, क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है'' (1 कुरिन्थियों 14:35)।

1 तीमुथियुस 2:8-14 में आगे कहा गया है, ''सो मैं चाहता हूं कि हर जगह पुरुष बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें। वैसे ही स्त्रियां भी संकोच और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आपको संवारे, न कि बाल गूंथने और सोने, और मोतियों और बहुमोल कपड़ों से पर भले कामों से क्योंकि परमेश्वर की भक्ति ग्रहण करने वाली स्त्रियों को यही उचित भी है। और स्त्री को चुपचाप पूरी अधीनता से सीखना चाहिए। और मैं कहता हूं, कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे। क्योंकि आदम पहिले, उसके बाद हव्वा बनाई गई। और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री के संबंध से जुड़ी दो प्रासंगिक बातों की ओर ले जाता है, (1) आदम पहले बनाया गया था, उसके बाद हव्वा; (2) आदम बहकाया नहीं गया था बल्कि स्त्री बहकावे में आकर अपराधिनी ठहरी।

इन अंतिम दिनों में स्त्रियां फिर शैतान की बातों की ओर ध्यान लगा रही हैं और कमजोर पुरुष फिर से आदम की कमजोरी को दोहरा रहे हैं क्योंकि बहुत सी जगहों पर स्त्रियां पुलपिट पर से प्रचार कर रही हैं। उन स्त्रियों पर गौर करें जिन्हें लगता है कि उन्हें प्रचारक होना चाहिए। उनमें से अधिकतर के संदेश, वस्त्र और दावे चरमपंथी होते हैं। ऐसी स्त्रियां हमारे सामने इस बात का स्पष्ट उदाहरण हैं कि कुछ स्त्रियां हव्वा की नकल कर रही हैं और उनके संबंध में जो परमेश्वर का वचन कहता है, उससे उन्होंने अपने कान फेर लिए हैं।

नहीं, परमेश्वर ने स्त्रियों को प्रचार करने के लिए अधिकृत नहीं किया है।

यीशु की प्रतिज्ञा (यूहन्ना 15)

एँडी क्लोर

''परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा। और तुम भी गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो।'' (आयतें 26, 27)

अटारी वाले कमरे की बातचीत में यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया था कि संसार द्वारा उन से घृणा की जाएगी (15:18-25)। उसकी चेतावनी बहिष्कार किए जाने या आलोचना से कहीं गहरी हो गई। उसने कहा कि इस घृणा में संसार की ओर से वैसा ही सताव और विरोध होगा जैसा उसे मिल रहा था। संसार उन्हें तुच्छ जानेगा, उन्हें ठुकराएगा और हिंसक रूप में उनका विरोध करेगा। और यहां तक कि उन्हें मरवा देगा। बेशक उसकी बातों से उनके मन में भय और बढ़ गया कि उनके साथ क्या होने वाला है। कुछ हद तक वे उस प्रकाशन को समझ गए कि यीशु उन्हें छोड़ रहा है जो ऐसी सच्चाई थी जिससे उन्हें गहरी निराशा मिली। परन्तु आने वाली घृणा के कंपा देने वाले इस अतिरिक्त तथ्य के साथ उनके पहले से तनाव से भरे और भयभीत मनों पर अनिश्चितता की एक और परत पड़ गई। क्या वे किसी और बुरी खबर को सहन कर सकते थे?

प्रेरितों के लिए तसल्ली की तुरन्त आवश्यकता को जानते हुए यीशु ने उनके मनों को चेतावनियों से थोड़ा अच्छी खबर की ओर मोड़ दिया। बीच में कहीं उसे उन्हें अदभुत आश्वस्त करने वाली प्रतिज्ञा दी कि वह वास्तव में उन्हें अकेला नहीं छोड़ रहा बल्कि उनके पास एक सहायक को भेज रहा है। मूलतया, वह कह रहा था, ''मैं जानता हूं कि तुम उससे जो मैंने तुम से कहा है डर गए हो। परन्तु मैं तुम्हें एक सहायक दूंगा। तुम्हें विशेष प्रकार की सहायता मिलेगी। मैं तुम्हारे पास पवित्र आत्मा को भेज रहा हूं।''

पवित्र आत्मा के इस विषय को यीशु द्वारा प्रेरितों के साथ पहले एक बातचीत में उठाया गया था। (देखें 14:16, 26) प्रभु ने उन्हें प्रवित्र आत्मा के विचार का परिचय दिया था और दो अन्य महत्वपूर्ण विषयों के द्वारा जिसकी चर्चा सुनी उनके लिए आवश्यक थी उसका रास्ता बनाते हुए उसके बारे में एक या दो आरंभिक सच्चाइयां प्रगट की थी।

15:26, 27 में आश्वासन के शब्दों में जिन्हें यीशु के एक वाक्य का लम्बा विवरण कहा जा सकता है, उसने उसका वर्णन किया जो पवित्र आत्मा ने प्रेरितों के लिए करना था। बेशक उनके लिए उसकी कल्पना सबसे अधिक प्रोत्साहित करने वाली थी। सही ढंग से विचार करने पर कि उनसे यह बातें किस संदर्भ में कही गई, हमें भी उनसे प्रोत्साहन मिलता है।

सहायक

यीशु ने पवित्र आत्मा को उनके ''सहायक'' के रूप में बताया (''सांत्वना देने वाला'' ''सलाहकार'') प्रेरितों की आवश्यकता होती थी और पवित्र आत्मा वह सहायक था जिसने जबर्दस्त सहायता देनी थी। यीशु द्वारा इस्तेमाल किया गया।

पवित्र आत्मा ने प्रेरितों को कई योग्यताएं देनी थी। वह काम जो प्रभु उन से करवाना चाहता था वह इतना महत्वपूर्ण था कि वह उन्हें इसे बिना आवश्यक शक्ति दिए नहीं कर सकता था। वह बड़ी सामर्थ, अर्थात बड़ी प्रतिभा जिसकी उन्हें आवश्यकता थी, पवित्र आत्मा की बनी रहने वाली उपस्थिति के द्वारा मिलती थी।

भेजा गया

इसके अलावा यीशु ने कहा कि वह स्वयं उनके पास पवित्र आत्मा को भेजेगा। उसने कहा, ''...जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा।'' एक अर्थ में, पिता उसे भेज रहा था; परन्तु एक दूसरे अर्थ में, यीशु ही उसे भेज रहा था। यीशु की प्रतिज्ञा में ''मैं' पर जोर दिया गया है जो यीशु को भेजने वाले के रूप में दिखाता है। परन्तु यूहन्ना 14:16 यह स्पष्ट करता है कि यीशु की प्रार्थना के उत्तर में आत्मा को पिता ने भेजना था। 14:26 में यीशु ने आत्मा को ''सहायक'' कहा ''...जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा।'' सांत्वना की इस बड़ी आशीष के देने में पिता और पुत्र दोनों शामिल हैं यानी आत्मा को पिता की ओर से यीशु की विनती पर और यीशे के नाम में भेजा गया था। अलग-अलग ढंग जिसने यीशु ने आत्मा के आने की प्रतिज्ञा की, पिता के साथ यीशु की एकता को दिखाते हैं और हमें याद दिलाते हैं कि यीशु में अपने पिता के स्तर की ही ईश्वरीयता थी।

फिर हम देखते हैं कि आत्मा परमेश्वरत्व का तीसरा सदस्य है। परमेश्वर आत्मा के रूप में उसने प्रेरितों के पास उन्हें उनकी सब आत्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए उनके साथ रहना था। इन प्रेरितों को राज्य/कलीसिया के बुनियादी भाग के रूप में महत्व दिया जा रहा था। यह नींव कोने के पत्थर के रूप में यीशु और मजबूत नींव के रूप में प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के ऊपर रखी जानी थी। (देखें इफिसियों 4:11, 12) इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रेरितों को उस सारे काम को जो उन्हें करने के लिए दिया जा रहा था करने के लिए ईश्वरीय अगुआई की आवश्यकता थी। उनके लिए यीशु को यह कहते सुनना कितना सांत्वना देने वाला होगा कि वह उनके साथ रहने के लिए, अर्थात उनके काम के लिए आवश्यक चीजें, स्थिरता और सामर्थ देने के लिए सहायक को भेजेगा। हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर जहां अगुआई करता है वहां उपाय भी करता है।

सच्चाई का आत्मा

यीशु ने पवित्र आत्मा को ''सत्य का आत्मा'' कहा। यह विलक्षण पदनाम पवित्र आत्मा के काम के मुख्य भाग को दिखाता है। सत्य के आत्मा के रूप में

उसकी भूमिका संसार में सच्चाई को देना, उसके द्वारा काम करना और उसकी पुष्टि करना है। पवित्र आत्मा ने प्रेरितों को वह याद दिलाना था जो उन्होंने यीशु से सुना था; उसने उन्हें वह सारी नई सच्चाई भी बतानी थी जो कलीसिया और संसार के लिए सुननी आवश्यक थी (14:26)। उसने एक ही बार में ईश्वरीय स्मरण दिलाने वाला और प्रगट करने वाला अर्थात जो प्रगट किया गया था उसे लेना और इसे उसके साथ जोड़ना जो शीघ्र प्रगट किया जाने वाला था, बनाना था।

यीशु की विदाई के बाद, संसार की सबसे बड़ी आवश्यकता सच्चाई को ग्रहण करना था। हम इस सबसे बड़ी आवश्यकता को तीन भागों में समझ सकते हैं (1) सच्चाई संसार पर प्रगट की जानी थी, (2) सच्चाई की संसार के लिए पुष्टि की जानी थी, और (3) संसार के लिए सच्चाई उपलब्ध की जानी थी। पवित्र आत्मा ने इन तीनों चुनौतियों परकाम करना था। उसने सच्चाई को लाना, बड़े कामों के द्वारा उसे साबित करना, और अन्त में पक्के तौर पर उपयोगी रूप में इसे संसार को देना था।

गवाह

संक्षेप में यीशु ने बताया कि ''पवित्र आत्मा गवाही देने के ढंग से सच्चाई को बताएगा।'' उसकी मुख्य गवाही यीशु का संदेश और उसकी प्राप्तियां होनी थी। अपने आपको उठाने के बजाय उसने केवल यह गवाही देनी थी कि यीशु कौन है और उसने क्या किया है। यीशु ने कहा, ''वह मेरी गवाही देगा।'' संसार को परमेश्वर के संदेश का सार शब्द में बताया जा सकता है, ''यीशु।'' यूहन्ना ने लिखा, ''जो गवाही देता है, वह आत्मा है, क्योंकि वह सत्य है'' (1 यूहन्ना 5:7क)। पवित्र आत्मा के द्वारा पुराने नियम ने यीशु के आने की भविष्वाणी की गई थी। नये नियम में पवित्र आत्मा न केवल यह प्रगट करता है कि यीशु आ चुका है, बल्कि हमें यह भी बताता है कि उसके आने का क्या अर्थ है और प्रतिज्ञा करता है कि वह फिर आएगा।

योग्य बनाने वाला

इस सब के अलावा, यीशु ने कहा कि आत्मा प्रेरितों को संसार में गवाही देने के योग्य बनाएगा या उन्हें सामर्थ देगा। उसने कहा, ''....वह मेरी गवाही देगा; और तुम भी मेरे गवाह हो क्योंकि तुम आरंभ से मेरे साथ रहे हो।'' (15:26, 27)। संसार की एक बहुत बड़ी आवश्यकता है कि वैसे देखे जैसे प्रेरितों ने यीशु को उसके साथ चलते हुए देखा था। यह प्रकाशन ''आरंभ से'' पूरा और सम्पूर्ण होना था। इसे प्रेरितों और अन्य गवाहों को एक प्रमाणिक रूप में दिया जाना था, ताकि इस संदेश पर कोई भी जो इस पर विश्वास लाना चाहे, विश्वास कर सके। बीच-बीच में पवित्र आत्मा ने देखा था कि संदेश न केवल संसार पर प्रगट किया जाए बल्कि इसकी पुष्टि भी की अर्थात पूरी तरह से इसे प्रमाणिक बताया। उसने प्रेरितों के बीच में रहकर और उनके द्वारा काम करके यह सारा कार्य पूरा करना था।

खाने का अधिकार किसे है?

ओवन डी. आल्ब्रट

लूका के अनुसार चेले रोटी तोड़ने के लिए इक्ट्ठा होते थे (प्रेरितों 20:7)। चेले कौन हैं? वे यीशु के अनुयायी हैं जिन्हें मसीही कहा जाता है (प्रेरितों 11:26)। क्या दूसरों को रोटी खाने और दाखरस में से पीने का अधिकार है?

एक प्रचारक के कथनों से यह संकेत मिलता है कि प्रभु की कलीसिया के इतिहास के आरंभ में केवल बपतिस्मा पाए हुए और वफादारी से जीवन व्यतीत करने वालों को ही प्रभु-भोज में भाग लेने की अनुमति दी जाती थी।

परन्तु उन्हें छोड़कर जिन्होंने प्रभु के नाम में बपतिस्मा लिया है तुम्हारे यूखरिस्त को कोई दूसरा न खाए या पीए। क्योंकि इस संबंध में प्रभु ने भी कहा है, ''पवित्र वस्तु कुत्तों के आगे मत डालो।''

और प्रभु के अपने दिन इक्ट्ठे हो जाओ और रोटी तोड़ो और धन्यवाद करो, पहले अपने अपराधों को मानो, ताकि तुम्हारा बलिदान शुद्ध हो। और अपने साथी के साथ झगड़ा होने पर, कोई व्यक्ति तब तक तुम्हारी सभा में न आए जब तक वे सुलह न कर ले, ताकि तुम्हारा बलिदान अशुद्ध न हो; क्योंकि यह वही बलिदान है जिसकी बात प्रभु के द्वारा की गई है।

बाइबल के एक जानकार टरटुलियन ने लिखा कि मसीही लोग पाखंडियों के साथ भोज में भाग लेकर गलत कर रहे थे।

वे एक जैसी पहुंच रखते थे, वे एक जैसा सुनते हैं तथा एक जैसी प्रार्थना करते हैं, और यहां तक कि यदि उनमें कोई ऐसी बात होती है तो वे काफिर बन जाते है। ''पवित्र वस्तु वे कुत्तों को डाल देंगे और अपने मोती भी,'' चाहे (पक्का है) कि ये असली नहीं है वे ''सूअरों को डाल देंगे।''

इस कथन में उसने दावा किया कि काफिर को प्रभु-भोज के ''मोती'' नहीं दिए जाते थे। एक धार्मिक समूह की शिक्षा है कि प्रभु-भोज में भाग लेने का अधिकार केवल 1,44,000 को है।

आज रोटी और दाख में भाग लेने के लिए सभी लोग वे होने चाहिए जिन्हें मसीह ''राज्य के लिए वाचा'' में लाता है।

कितने लोग हैं जो भाग लेते हैं। यीशु ने कहा कि केवल ''छोटे'' को ही प्रतिफल के रूप में स्वर्गीय राज्य मिलेगा। (लूका 12:32) पूरी संख्या 1,44,000 (प्रकाशितवाक्य 14:1-3) होगी। उस समूह का चयन सन 33 में होने लगा। तर्कसंगत रूप में अब इसमें भाग लेने वाली केवल छोटी संख्या ही होनी थी।

कुछ कलीसियाएं यह सिखाती है कि सहभागिता उन से जो परमेश्वर के अनुग्रह में नहीं हैं रोक लेनी चाहिए। उनका मानना है कि ऐसे लोग यदि प्रभु-भोज को खाते हैं वे अपने ऊपर दण्ड लाते हैं। मार्टिन लूथर की यही शिक्षा थी,

(भोज) में मसीह की देह की उपस्थिति व्यावहारिक रूप में इतनी वास्तविक है कि इसे खाकर दुष्ट लोग अपने आपको दोषी ठहराते है।''

इस प्रश्न का उत्तर देने में कि प्रभु-भोज देने के योग्य कौन है कई आयतें सहायता कर सकती हैं, प्रेरितों 2:41, 42, 20:7, 1 कुरिन्थियों 5:1-11 और 10:16, 17 अब आइए प्रत्येक ध्यान में समीक्षा करते हैं।

जिन्होंने बपतिस्मा लिया है (प्रेरितों 2:41, 42)

सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया, और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए। और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने और संगती रखने और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे (प्रेरितों 2:41, 42)।

इस वचन के अनुसार आने वाले वे लोग थे जो रोटी तोड़ने में लौलीन रहे। ये मसीही लोग उन तीन हजार आत्माओं में से थे जिन्होंने पतरस की शिक्षा को मानकर बपतिस्मा लिया था और पिन्तेकुस्त के दिन प्रभु की कलीसिया में मिलाए गए थे। रोटी तोड़ने के अलावा वे प्रेरितों की शिक्षाओं को सीखने और उनके अनुसार जीने, मसीही संगति और प्रार्थना में अपने आपको दे रहे थे।

मसीही लोग (प्रेरितों 20:7)

सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उनसे बातें कीं, और आधी रात तक बातें करता रहा। (प्रेरितों 20:7)।

लूका ने लिखा कि चेले अर्थात मसीही लोग (देखें प्रेरितों 11:26), वही थे जो रोटी तोड़ने के लिए इक्ट्ठा होते थे। फिर बाइबल का यह उदाहरण सिखाता है कि प्रभु -भोज में भाग लेने वाले लोग वही थे जो प्रेरितों की शिक्षा के अनुसार मसीही बन गए थे।

मसीही जीवन जीने वाले (1 कुरिन्थियों 5:1-11)

जानबूझकर पाप पूर्ण जीवन बिताने वाले मसीही लोगों को प्रभु-भोज खाने का कोई अधिकार नहीं है। पौलुस ने लिखा कि अपने पिता की पत्नी के साथ अनैतिक रूप में रहने वाले व्यक्ति को शैतान को सौंप दिया जाए (1 कुरिन्थियों 5:1-8)। इसमें आत्मिक स्तर पर या उसके साथ खाने पर भी मसीही लोगों के उसके साथ संगति करने से इनकार शामिल है (1 कुरिन्थियों 5:11)। निश्चय ही इसमें प्रभु-भोज में भाग लेना भी शामिल है। वारनर एलर्ट ने इस वचन के विष्य में लिखा है:

वह हवाला प्रभु भोज के संबंध में हो सकता है, जिसकी चर्चा किसी पत्र में है। चाहे इसका विशेष रूप में अर्थ यह नहीं पर निश्चय ही यह अपवाद नहीं हो सकता है।

बाद में उसने लिखा :

कुरिन्थी व्यभिचारी के साथ पौलुस की बात के अनुसार करना यह संकेत देने के लिए असंभव है कि केवल कुरिन्थुस में उससे संगति तोड़ी जाए, और उसके अथेने में होने पर इस पर कोई ध्यान न दिया जाए। एक मन से इक्ट्ठा हुए कुरिन्थियों में पौलुस उसे शैतान को सौंप देता है (1 कुरिन्थियों 5:4 से) आरंभिक मसीही लोगों के लिए शैतान का राज्य स्थानीय रूप में मसीह के राज्य से बढ़कर नहीं था।

पौलुस ने इस अनैतिक व्यक्ति के विषय में स्पष्ट निर्देश दिए: पुराना खमीर निकाल कर अपने आप को शुद्ध करते, कि गूंधा हुआ आटा बन जाओ, ताकि तुम अखमीरी हो, क्योंकि हमारा भी फसह जो मसीह है, बलिदान हुआ है। सो आओ, हम उत्सव में आनन्द मनावे, न तो पुराने खमीर से और न बुराई और दुष्टता के खमीर से और न बुराई और दुष्टता के खमीर से, परन्तु सीधाई और सच्चाई की अखमीरी रोटी से (1 कुरिन्थियों 5:7, 8)।

यह पापी व्यक्ति ''पुराना खमीर'' था। विश्वासी मसीही लोगों को उसके साथ संगति नहीं करनी थी, क्योंकि पापी व्यक्ति होने के कारण वह पूरे मसीह समुदाय को भ्रष्ट कर सकता था। पुराने खमीर अर्थात उस अनैतिक व्यक्ति को निकालने से मसीही समुदाय अखमरी बना रह सकता था। इस प्रकार से वे दुष्ट व्यक्ति से प्रभावित हुए बिना पर्व अर्थात प्रभु-भोज में आ सकते थे। गोर्डन डी. फी ने सुझाव दिया है :

परन्तु यह संभव है कि पर्व को मनाने के इस अगला हवाला (1 कुरिन्थियों 5:8) प्रभु की मेज पर उनके बैठे होने का संकेत भी है। यकीनी तौर पर यह बताने का कोई ढंग नहीं है, चाहे किसी भाई को निकालने के संदर्भ में मेज का संकेत विशेष रूप में आयत 11 की आज्ञा के प्रकाश में कि वे उसके साथ खाएं भी न, बिल्कुल सही होगा।

एक ही देह के अंग (1 कुरिन्थियों 10:16, 17)

वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते है, क्या मसीह के लोहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं। इसलिए, कि एक ही रोटी है सो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं, क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं (1 कुरिन्थियों 10:16, 17)।

पौलुस ने लिखा कि (रोमियों 12:5, 1 कुरिन्थियों 12:12, 13, 20; इफिसियों 4:4), जो कि कलीसिया है (इफिसियों 1:22, 23: कुलुस्सियों 1:18, 24) की प्रभु-भोज में मसीह की देह और लहू में सहभागिता है। यीशु की देह और लहू में आत्मिक रूप में सहभागिता करने वाले लोग वही हैं जो उस एक देह अर्थात कलीसिया में है। पौलुस ने संकेत दिया कि इस देह के अंग या सदस्य

प्रभु-भोज खाने वाले लोग हैं। एक देह के बाहर वाले लोग वे नहीं है जिनकी सहभागिता मसीह के साथ है, इस कारण उसकी देह और लहू में सहभागिता करने का उन्हें कोई अधिकार नहीं है।

वह एक देह वही है जो मसीह में है (रोमियों 12:5), जिसमें विश्वास और बपतिस्मे के द्वारा प्रवेश पाया जाता है (रोमियों 6:3; गलातियों 3:26, 27)। इसका अर्थ यह हुआ कि भोज में अपने विश्वास और फिर मसीह में बपतिस्मा लेने वाले लोग ही भाग लेते हैं।

धर्म का दास बनने के लिए किसी ने मन से आज्ञा मानी है या नहीं इसका पता किसी व्यक्ति को नहीं चल सकता (रोमियों 6:17, 18)। मनुष्य के मन को केवल परमेश्वर जानता है। यह सही है इस कारण हर व्यक्ति को प्रभु-भोज में अपने भाग लेने के औचित्य को स्वयं परखना चाहिए। इस तथ्य का कि किसी को खाने का अधिकार है अर्थ नहीं है कि दूसरों को उसे भोज से मना करने का अधिकार है। हर व्यक्ति अपनी जांच स्वयं करे और इसी आधार पर यीशु की यादगारी भोज में भाग ले (1 कुरिन्थियों 11:28)।

इस नियम का अपवाद वह मसीही है जिससे मण्डली ने संगति तोड़ ली है। मसीही लोग ऐसे व्यक्ति के साथ न खाएं (1 कुरिन्थियों 5:7, 11)।

प्रभु भोज देने में सहायता करने वाले लोग यदि समझा दें कि भोज में भाग लेने वाले लोग एक देह में बपतिस्मा पाने के कारण (1 कुरिन्थियों 12:13) मसीह की एक देह के अंग है (1 कुरिन्थियों 10:16, 17) तो अच्छा होगा।

चार पत्नियां

सलेक्टड

एक बार की बात है- एक बड़ा शक्तिशाली और समृद्ध राजा था। उसकी चार पत्नियां थी।

वह अपनी चौथे नम्बर वाली पत्नी से बड़ा ही प्रेम करता था। वह उसे महंगे-महंगे वस्त्र और गहने आदि लाकर देता और उसे हर सुख-सुविधा उपलब्ध करवाता था। कहने का मतलब यह कि वह उसकी हर मांग को पूरा करता था।

तीसरे नम्बर वाली पत्नी से भी वह बहुत प्रेम करता था और अपने पड़ोसी राज्यों में उसका प्रदर्शन करता था। परन्तु उसके मन में भय रहता था कि कहीं वह उसे छोड़ कर किसी दूसरे के साथ न भाग जाए।

राजा अपनी दूसरे नम्बर वाली पत्नी से भी प्रेम करता था। वह उसकी विश्वास-पात्र थी और उसके साथ बड़ी करूणा और धीरज के साथ पेश आती थी। जब भी वह किसी परेशानी में होता, तो उसे पता होता था कि उसके पास जाने से उसका बोझ हल्का हो जाएगा और वह उसे उस परेशानी में से निकल जाने में सहायता करेगी।

उस राजा की पहली पत्नी एक अच्छी जीवन-साथी थी और साम्राज्य को खड़ा करने और राज्य का विस्तार करने में उसने उस का बड़ा साथ दिया था।

एक दिन राजा बीमार पड़ गया और उसे लगा कि अब उसका अंत निकट है। उसे शानो-शौकत भरे अपने जीवन का ध्यान आया और यह सोचकर परेशान हो गया कि "अभी तो मेरे पास चार पत्नियां हैं, पर जब मैं मर जाऊंगा, तो मैं अकेला ही होऊंगा।"

सो उसने अपनी चौथे नम्बर वाली पत्नी को बुलाया और पूछा, "मैंने तुझ से बहुत प्रेम किया। मैं तुझे महंगे-महंगे वस्त्र और गहने लाकर दिया करता था और तेरा बड़ा ध्यान रखा करता था। अब जबकि मैं मरने पर हूं, तो क्या तू मेरे साथ रहने को मेरे साथ चलेगी?"

"मतलब ही नहीं" चौथी पत्नी तपाक से बोली। फिर बिना कुछ और कहे वहां से चली गई। उदास राजा ने फिर तीसरी पत्नी को बुलाया और पूछा, "मैंने जीवनभर तुझसे प्यार किया है। अब जबकि मैं मरने पर हूं, तो क्या मेरे पीछे मेरे साथ चलेगी?"

"न बाबा न", तीसरी पत्नी का उत्तर था, "जीवन बहुत सुन्दर है। आपके मरने के बाद मैं तो दूसरी शादी कर लूंगी।" यह सुनकर, उसका दिल बैठ सा गया और वह खामोश हो गया। फिर उसने दूसरे नम्बर वाली पत्नी से कहा, "मुझे जब भी कोई जरूरत होती थी तो मैं तेरे ही पास आता था और तू मेरी मदद भी करती थी। जब मैं मर जाऊंगा, तो क्या तू मेरे पीछे मेरा साथ देगी?"

"क्षमा करना राजन, पर इस बार मैं आपकी मदद नहीं कर सकती," दूसरी पत्नी का उत्तर था। "ज्यादा से ज्यादा मैं कब्र तक आपके साथ चल सकती हूं।" उसका उत्तर राजा को अपने ऊपर बिजली गिरने जैसा लगा, और अब उसकी हिम्मत जवाब दे गई। तभी एक आवाज आई, "मैं आपके साथ चलूंगी। आप चाहे जहां भी रहो, मैं आपके साथ ही रहूंगी।"

राजा ने सिर उठाकर देखा कि यह तो उसकी पहले नम्बर वाली पत्नी थी। वह बहुत ही दुबली पतली और कुपोषण की शिकार लग रही थी।

मन में अति खिन्न हुए राजा ने कहा, "मुझे चाहिए था कि जब मेरे पास अवसर था, तब मैं तेरी सेवा करता।"

सच यह है कि अपने जीवन में हम सब की चार पत्नियां होती हैं।

हमारी चौथी पत्नी हमारी देह है। इसे सुन्दर दिखाने के लिए हम चाहे कितना भी समय और साधन लगा दें, मृत्यु के समय यह हमें छोड़ ही देगी।

हमारी तीसरी पत्नी हमारी सम्पत्ति, हमारा रूतबा और हमारी जायदाद है। मरने के बाद ये सब दूसरों को मिल जाएंगे।

हमारी दूसरी पत्नी हमारा परिवार और हमारे मित्र है। वे चाहे हमारे कितना भी करीबी क्यों न रहे हों, वे अधिक से अधिक हमारी कब्र तक हमारे साथ जा सकेंगे।

और हमारी पहली पत्नी हमारी आत्मा है। धन-दौलत और संसार की सुख-सुविधा का पीछा करते हुए हम आमतौर पर इसे भूल ही जाते हैं। इसे अभी

से पालें-पोसें और मजबूत बनाएं, क्योंकि परमेश्वर के सिंहासन तक केवल यही अंग हमारे साथ जाएगा और अनंतकाल तक हमारे साथ रहेगा। अपनी आत्मा की कद्र करें ओर इसे परमेश्वर का वचन और प्रार्थना खिलाएं। (मत्ती 16:26)

क्या देह का पुनरुत्थान होगा?

पैरी बी. कॉथम

बाइबल निश्चय ही मृतकों के पुनरुत्थान की शिक्षा देती है। यीशु ने कहा था, "इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।" (यूहन्ना 5:28, 29)। पौलुस के कथनानुसार, "धर्मी और अधर्मी दोनों का जी उठना होगा।" (प्रेरितों 24:15)। जी उठी देह एक बदली हुई देह होगी। "सब बदल जाएंगे," पौलुस कहता है। और वह बदलाव एक क्षण में तत्काल हो जाएगा, "क्षणभर में, पलक मारते ही।" जो मर चुके हैं वे सब जी उठेंगे; वे जो मसीह के आने पर जीवित होंगे मरेंगे नहीं, परन्तु उनके शरीर अमर बना दिये जाएंगे। (देखिए फिलिप्पियों 3:21)। "क्योंकि अवश्य है कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले।" (1 कुरिन्थियों 15:20-57)।

बाइबल की शिक्षा यह है, कि जब यीशु आएंगे तो उस समय मनुष्यों की आत्माएं अधोलोक में से बाहर आ जाएंगी और उनके शरीर जिलाए जाएंगे। उस अंतिम समय में सभी आत्माएं अधोलोक में से निकलकर अपने-अपने उन शरीरों के साथ एक हो जाएंगी जो जी उठकर अमरता में परिवर्तित हो जाएंगे। (यूहन्ना 5:28, 29; 1 थिस्सलुनीकियों 4:14; प्रकाशित. 1:18; 20:13)। तब अधोलोक का अंत हो जाएगा। (प्रकाशित. 20:14)। इसके बाद न्याय किया जाएगा और तब सब मनुष्यों को उनका अनन्त प्रतिफल या अनन्त दण्ड दिया जाएगा। (मत्ती 12:41, 42; 16:27; 25:31-46; प्रेरितों. 17:31; 24:15)।

मृतकों में से जी उठने के द्वारा मसीह ने, "मृत्यु का नाश किया, और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया।" (2 तीमुथियुस 1:10)। परमेश्वर के विश्वासी संतान को मृत्यु का कोई भय नहीं है। (इब्रानियों 2:14, 15)। वह जानता है कि मसीह ने मृत्यु पर विजय पा ली है, और एक समय ऐसा आएगा जब सारे मृतक जी उठेंगे। वह भजन-संहिता की पुस्तक के लेखक के साथ मिलकर यूं कह सकता है, "चाहे मैं घोर अंधकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा क्योंकि तू मेरे साथ रहता है।" (भजन. 23:4)।